

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव



डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
सागर (मध्यप्रदेश) - 470 003
दूरभाष : 91-7582-264455
ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com



80

मध्य भारती



80

जनवरी-जून, 2021



मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

ISSN 0974-0066

UGC Care List, Group-C (Multi disciplinary), Sl.no.-15

संरक्षक

प्रो. जनक दुलारी आही
कुलपति

प्रधान सम्पादक

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा

सम्पादक

प्रो. भवतोष इन्द्रगुरु
प्रो. ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव
डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. छबिल कुमार मेहेर



डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर (मध्यप्रदेश) - 470003

दूरभाष : (07582) 297133

ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

सम्पादकीय परामर्श मण्डल

- प्रो. ए.एन. शर्मा
- प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी
- प्रो. अशोक अहिरवार
- प्रो. दिवाकर राजपूत
- प्रो. डी.के. नेमा
- प्रो. नागेश दुबे
- डॉ. अनुपमा कौशिक
- डॉ. प्रकाश जोशी

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

अंक-80, जनवरी-जून 2021

ISSN 0974-0066 (पूर्व-समीक्षित अर्द्धवार्षिक शोध-पत्रिका)

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

UGC Care List, Group-C (Multi disciplinary), Sl.no.-15

प्रकाशित रचनाओं के अभिमत से डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर या सम्पादकों की सहमति अनिवार्य नहीं है तथा यहाँ प्रकाशित आलेखों की 'प्लेजियरिज्म' (Plagiarism) सम्बन्धी शुचिता की जिम्मेदारी लेखकों की है।

सम्पादकीय पत्र व्यवहार :

मध्य भारती

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर - 470003 (म.प्र.)

सदस्यता शुल्क	प्रति अंक	आजीवन	व्यक्तिगत	संस्थागत
	रु. 150/-	रु. 2000/-	रु. 200/-	रु. 4000/-

दूरभाष : (07582) 297133

ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

आवरण : डॉ. छबिल कुमार मेहेर

मुद्रण :

अमन प्रकाशन

कटरा नमक मंडी, सागर (म.प्र.)

अनुक्रमणिका

साहित्य में व्यक्ति और समाज का रूपांतरण राजेन्द्र यादव	7
भोजपुरी लोक में वैकल्पिक इतिहासबोध की वाचिक परम्परा राघवेन्द्र प्रताप सिंह	16
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का इतिहास-बोध विवेकानन्द उपाध्याय	24
छत्तीसगढ़ की प्राचीन कला संस्कृति मोहन लाल चढ़ार	31
शिक्षा, बच्चे एवं मानसिक स्वास्थ्य : एक सामयिक सन्दर्भ संजय शर्मा एवं विवेक जायसवाल	36
भारत में जनहित याचिकाओं की प्रासंगिकता और उपलब्धियां राघवेन्द्र प्रताप सिंह	42
मानवाधिकारों के संरक्षण एवं संवर्धन में नागर समाज की भूमिका मिथिलेश कुमार	49
भारत के ग्रामीण विकास में ग्रामीण पर्यटन का योगदान राजबहादुर अनुरागी	56
बालरामायण में सामाजिक सद्भाव रामहेत गौतम	65
हजारीप्रसाद द्विवेदी का व्याकरणिक-चिन्तन चन्दन तिवारी	73
सिलसिला ए चिश्ती और हिन्दुस्तानी मौसिकी आकाश जैन	81

गोवा मुक्ति आन्दोलन में सागर की सहोदरा राय की भूमिका 93
बी.के. श्रीवास्तव

रामविलास शर्मा की इतिहास दृष्टि 101
आशुतोष

Paris Climate Agreement, COVID-19 and India's 107
Dilemma of Competing Priorities
Shri Prakash Singh & Akshay Kumar Singh

E-Content : Teaching Through Web 121
Harel Thomas

Internal Marketing to Ethical Internal Marketing 131
Astha Dewan

Women in Gandhi's Swaraj with Special 137
Reference to Raja Rao's Kanthapura
Nishtha Saxena

Girish Karnad's Yayati : A Tale of an Old Man's 146
Lechery and an Un-heroic Filial Sacrifice
R. T. Bedre

Rama Mehta's Inside the Haveli : A Study in 151
Relation to the Feminist Perspectives
Rashmi Singh

A Neuro Scientific Perspective on 158
Universal Harmony
Preeti Wadhwani

रामविलास शर्मा की इतिहास दृष्टि

आशुतोष

इतिहास पढ़ने का आनंद नहीं, इतिहास को बदलने का आनन्द इतिहास में दर्ज होता है। इतिहास बदलने की प्रक्रिया में इतिहास के आधारभूत तथ्य नहीं बदलते लेकिन इतिहासकारों द्वारा उन पर दिया जाने वाला बलाघात अवश्य बदल सकता है। इसीलिए इतिहास की नयी व्याख्याएँ और उनका नये सिरे से पुनर्गठन संभव हो पाता है। यह भी कि इतिहास, तथ्यों का सिलसिला नहीं होता, बल्कि उन तथ्यों के महत्व से निर्मित होता है। इतिहासकार इन्हीं तथ्यों को पुनर्व्याख्यायित करता है तो उन तथ्यों से निर्मित ऐतिहासिक ढाँचे में परिवर्तन होता है और एक नई ऐतिहासिक चेतना निर्मित होती है।

रामविलास शर्मा हिन्दी साहित्य का कोई व्यवस्थित इतिहास नलिखने के बावजूद न केवल अपने पूर्ववर्ती इतिहासकारों से भिन्न हैं बल्कि इतिहास लेखन के इतिहास से गुजरने के लिए एक अनिवार्य विचारक हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में शुक्लजी के महत्व को स्वीकारते हुए रामविलास शर्मा कहते हैं कि - “शुक्लजी अपने समय में तो इतिहास लेखन में दिग्विजयी हुए ही थे, उसके बाद उनका काल विभाजन या हिन्दी साहित्य की मुख्य धाराओं का विभाजन-बहुत कुछ अपने मूल रूप में कायम है। कुछ लोगों ने जोर बहुत लगाया लेकिन शुक्ल जी की कायम की हुयी व्यवस्था टस सेमस न हुयी। वीरगाथा, निर्गुण और सगुण भक्ति, प्रेम कथानक और रीतिकाव्य, भारतेन्दु युग और छायावाद आदि का सिलसिला अब भी चला आता है।” शुक्ल जी के इतिहास पद्धति से इतनी दूर तक सहमत होते हुए भी रामविलास शर्मा शुक्ल जी द्वारा निर्मित ऐतिहासिक ढाँचे से टकराते हैं। डॉ. शर्मा का मानना है कि-“सही प्रश्न प्रस्तुत करना स्वयं में एक उपलब्धि है। ऐसे प्रश्न प्रस्तुत करने का अर्थ है पुराने इतिहास लेखन की आलोचना करना। इस आलोचना का अर्थ है नये इतिहास लेखन की जमीन तैयार करना।” रामविलास जी ‘दिग्विजयी’ इतिहासकार शुक्लजी के ऐतिहासिक ढाँचे पर सवाल उठाते हैं। बेशक वे सवाल सही हैं। बकौल नित्यानंद तिवारी कि-“शुक्ल जी के इतिहास के ढाँचे से टकराने वाले केवल दो ही नाम हैं - पं. हजारीप्रसाद द्विवेदी और डॉ. रामविलास शर्मा। एक तीसरा नाम श्री शिवदानसिंह चौहान का भी है, लेकिन किसी ऐतिहासिक ढाँचे से टकराने के बजाय हड़बड़ी में वे इतिहास से ही टकरा गये।” शुक्ल जी और द्विवेदी जी जैसे इतिहासकारों की चिंता का केन्द्र भक्ति साहित्य रहा है। शुक्ल जी ‘लोकप्रवृत्ति’ और ‘प्रसिद्धि’ तथा द्विवेदी के ‘अन्तर्विरोध’ और परम्परा के आधार का सर्वाधिक उपयोग भक्ति काव्य के सन्दर्भ में हुआ है। ये आधार इनकी आलोचना पद्धति और साहित्यिक मूल्यांकन के भी आधार प्रस्तुत करते हैं। ये दोनों इतिहासकार अपने युग और समय के खास दबाव के बीच हिन्दी साहित्य की पहचान की